कर्म योगी : श्री कानराज सालेचा

–प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय (राज.)
पूर्व संयोजक, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, लाड़नू (राज.)
सेवानिवृत अधीक्षण अभियन्ता, जन स्वा. अभि. विभाग, राजस्थान

ऐसा कहा जाता है – **"होनहार बिरवान के होत चिकने पात।"** 82 वर्ष पूर्व श्री कानराज सालेचा सिंवाची मालाणी क्षेत्र के प्रसिद्ध पचपदरा (बाड़मेर– राज.) गांव की धरा पर अवतरित हुए। बाल्यकाल से ही उनकी प्रतिभा में निखार आने लगा। आप लम्बे समय से जोधपुर में प्रवास कर रहे हैं। आपने अपने पैतृक व्यवसाय "शा. जसराज विरेन्द्र कुमार सालेचा, घंटाघर, जोधपुर" फर्म का संचालन बड़ी नैतिकता से लम्बे समय तक किया। इस फर्म के माध्यम से आप शुद्ध खाद्यान्न का वितरण घर–घर जाकर करते तथा अपनी फर्म पर भी वितरण करते। जोधपुर के लोगों में आपकी ईमानदारी की छाप थी, जिसका कारण था कि आप अपनी युवावस्था से ही अणुव्रती बन गये थे। आपके जीवन में गांधीवादी विचारधारा का बहुत बड़ा प्रभाव है। इसी कारण आप युवावस्था से ही समाज सेवा में संलग्न हो गये थे।

कौन कितना जीता है यह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं, जितना कौन कैसे जीता है, यह महत्त्वपूर्ण है। भारतीय दर्शन के अनुसार मनुष्य जीवन मिलना अति दुर्लभ है। चार बातें मिलना अति कठिन है–मनुष्य जीवन, धर्म का श्रवण, धर्म में श्रद्धा, धर्म को चरित्र में ढालना। भाग्य से मनुष्य जीवन तो मिल जाता है लेकिन उसका उपयोग स्व–पर चरित्र निर्माण में बहुधा नहीं हो पाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में जीने के लिए सामुदायिक चेतना का विकास जरूरी है। सामाजिक जीवन में शांतिपूर्ण–सहवास, सामंजस्य, सौहार्द, भाईचारा, मैत्री आदि गुण अति आवश्यक है। इसके बिना हमारा सामाजिक जीवन अपूर्ण एवं अशांत रहता है। वही व्यक्ति समाज को सेवा दे सकता है जो अपने आप में सेवा की भावना रखता है। व्यक्ति के स्वार्थों से ऊपर उठने पर ही सेवा भावना का दायरा प्रारम्भ होता है। जो स्वयं के साथ–साथ दूसरों के लिए जीता है, यह महत्त्वपूर्ण बात है। इसे परमार्थ की चेतना कहते हैं। चेतना दो प्रकार की होती है–स्वार्थ की चेतना, परमार्थ की चेतना। सामाजिक प्राणी के लिए स्वार्थ भी जरूरी है, क्योंकि उसके स्वयं का शरीर है, परिवार है। परिवार के भरण–पोषण की जिम्मेदारी भी व्यक्ति स्वयं पर है। लेकिन अपने परिवार का भरण–पोषण कर शेष समय जो व्यक्ति मानवता के अभ्युदय के लिए लगाता है, वह उसकी परमार्थ चेतना का परिचायक है।

श्री कानराज सालेचा निष्काम कर्मयोगी हैं। धर्म का श्रवण कर उसे चरित्र में ढालना यह उनकी विशेषता है। वे स्व–पर चरित्र निर्माण पर बहुत जोर देते हैं। आपकी सामुदायिक चेतना विकसित है। आपका जीवन शांतिपूर्ण–सहवास, सामंजस्य, मैत्री एवं सद्भावना गुणों से ओतःप्रोत है। आप में कर्त्तव्य–निष्ठा, धर्म–निष्ठा, गुरु–निष्ठा एवं मानवीय–निष्ठा कूट–कूट कर भरी हुई है। इसी कारण 82 वर्ष की उम्र में भी स्वस्थ रहकर समाज सेवा में अपना योगदान दे रहे हैं।

आप मानवीय एकता व सामाजिकता के दायित्व को बखूबी निभाते हैं। आपके भाग्य ने आपको समृद्धि प्रदान की लेकिन आप उस समृद्धि को अकेले नहीं भोग कर बांटकर चलते हैं। आप धन का सदुपयोग करना जानते हैं। ये संस्कार आपको वंशानुगत मिले। आपके दरबार में सामाजिक सेवा के लिए जो भी सहयोग के लिए आता है, आप उसे निराश नहीं लौटाते। आपकी परमार्थ चेतना विकसित है, तभी आप परमार्थ के कार्यों में पूर्ण निष्ठा रखते हैं। आपका दृष्टिकोण समन्वयवादी है। लेकिन दोष पाये जाने पर अंगुली–निर्देश से भी नहीं हिचकिचाते। सिद्धान्तों के विपरीत आचरण एवं कर्त्तव्य–हीनता आपको बिल्कुल पसंद नहीं है। आपका दृष्टिकोण विशाल है। आप भूतकाल से प्रेरणा लेकर वर्तमान को निर्धारित करते तथा भविष्य की योजना बनाते हैं। श्री कानराज सालेचा एक कुशल समाज सेवी है। किसी योजना के निर्माण व

संचालन में लोग आपसे परामर्श लेते हैं। आपकी मानसिकता है कि लक्ष्य बहुत बड़ा होना चाहिए ताकि उसकी क्रियान्विति भी बड़े स्तर पर हो। आप एक निर्भीक वक्ता एवं कुशल प्रबंधक भी है। पारिवारिक जीवन में आप सभी को साथ लेकर चलते हैं। छोटे–बड़े सभी के विचारों को आदर देते हैं। आपके जीवन में अनेकांत अवतरित है। आचार्य तुलसी द्वारा रचित **''आग्रह–हीन गहन चिंतन का द्वार हमेशा खुला रहे''** युक्ति को आपने चरितार्थ किया।

श्रीमान् कानराज सालेचा में संघ–निष्ठा कूट–कूट कर भरी हुई है। वे संघ व संघपति के प्रति सर्वात्मना समर्पित हैं। आप शैशव काल से ही संघीय गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की प्रेरणा से आप अणुव्रत समिति से जुड़े तथा अणुव्रत को अपनी कर्म–भूमि बनाया। राजस्थान अणुव्रत प्रादेशिक समिति के आप लम्बे समय से पदाधिकारी रहे हैं तथा पूरे प्रान्त में घूम–घूम कर अणुव्रत का शंखनाद फूंकते हैं। आपने हजारों अणुव्रती बनाये। नैतिकता के इस अभियान के माध्यम से आपने लोगों में नैतिक चेतना का जागरण किया तथा गिरते हुए मानवीय, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना में अपना योगदान दिया। आपकी विशिष्ट सेवाओं के आधार पर आचार्यश्री ने आपको **"अणुव्रत सेवी"** अलंकरण से विभूषित किया। अणुव्रत आपके रोम–रोम में बसा हुआ है। इसके अतिरिक्त आपको अनेक सम्मानों से नवाजा गया है।

कुल मिलाकर श्री कानराज सालेया एक निष्काम कर्म योगी एवं सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी हैं। आपका मनुष्य जीवन सार्थक है। आप एक–एक क्षण चरित्रवान व्यक्तित्व को जी रहे हैं। आप सिद्धान्त एवं परिणति दोनों में संतुलन रखते हैं। आप स्वयं में एक अच्छे व्यक्ति, अच्छे पारिवारिक सदस्य, अच्छे सामाजिक एवं राष्ट्रीय सदस्य हैं। आपका जीवन सभी के लिए फलदायक एवं अनुकरणीय है। आपके मंगलमय शुभ–भविष्य की शुभकामना।